लूका द्वारा प्रयुक्त सम्भावित स्रोत

लूका 1:1-4 (जो केवल लूका की पुस्तक का ही नहीं, बल्कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का भी परिचय है) यह स्पष्ट करता है कि लूका ने ''सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जांच करके'' लिखा। हम उन सभी स्थानों या उन सभी लोगों को नहीं जानते जिनसे लूका मिला होगा और जिनसे उसने पूछताछ की होगी, परन्तु यहां कई स्रोत दिए गए हैं और हो सकता है, इनका उपयोग लूका ने प्रेरितों के काम नामक पुस्तक लिखने के लिए किया हो:

(1) व्यक्तिगत अनुभव: लूका ने पौलुस के साथ काफ़ी यात्राएं की थीं (प्रेरितों के काम में ''हम'' शब्द पर ध्यान दें)। इन यात्राओं का विस्तृत वर्णन यह सुझाव देता है कि लूका ने अपनी यात्राओं के दौरान अवश्य ही अपने पास एक डायरी रखी होगी।

(2) पौलुस: यात्रा करते समय पौलुस ने लूका को बताया होगा कि जब स्तिफनुस सन्हेद्रिन अर्थात महासभा के सामने खड़ा था तो क्या हुआ (तु. प्रेरितों 7:58; 8:1), उसके अपने मनपरिवर्तन और आरम्भिक प्रयासों के तथ्य और उनकी टीम में लूका के आने से पहले की बातें बताई होंगी। पौलुस को प्रभु से विशेष प्रकाशन प्राप्त हुआ था (2 कुरिन्थियों 12:1, 7) जिसमें यीशु के जीवन के बारे में प्रकाशन भी शामिल थे (1 कुरिन्थियों 11:23-25)।

(3) यरूशलेम से प्रेरिताई के आदेश: ये आदेश लिखे गए और सीरिया में अन्ताकिया को भेजे गए (प्रेरितों 15:22-29; 21:25 भी देखिए)। सम्भवत: वे अन्ताकिया में सम्भाल कर रखे होंगे। ध्यान दें कि परम्परा के अनुसार, लूका अन्ताकिया का रहने वाला था।

(4) मनाहेम (प्रेरितों 13:1): मनाहेम, अन्ताकिया का रहने वाला एक मसीही था, जो ''राजा हेरोदेस का दूधभाई'' था, उसने हेरोदेस के परिवार के बारे में लूका को अधिकतर बातें बताई होंगी।

(5) फिलिप्पुस एक सुसमाचार प्रचारक: जब लूका कैसरिया में था, तो वह फिलिप्पुस के घर ही ठहरा था (प्रेरितों 21:8), जिससे उसे उन सात (प्रेरितों 6:1-6) की नियुक्ति के बारे में और सामरियों और कूश देश के खोजे के मनपरिवर्तन (प्रेरितों 8) के बारे में पता चला होगा।

(6) कुप्रुस का मनासोन: लूका कुप्रुस निवासी मनासोन के साथ रहा (प्रेरितों 21:16), जिससे उसने कुप्रुस में कलीसिया की स्थापना के बारे में आंकड़े प्राप्त किए होंगे (प्रेरितों 13:4-12)।

(7) यरूशलेम के अगुवे: जब लूका यरूशलेम में था (प्रेरितों 21:17), तो, उसे प्रभु के भाई याकूब और अन्य लोगों से मिलने का अवसर अवश्य मिला होगा जो कलीसिया की स्थापना के समय से ही वहां रह रहे थे। प्रेरितों में से कई अभी भी वहीं थे। शायद यीशु

की माता, मरियम भी अभी उस इलाके में ही थी।[1] लूका को इनसे न केवल कलीसिया के आरम्भिक दिनों के बारे में ही, बल्कि यरूशलेम में हुई सभा के बारे में भी पता चल गया होगा (प्रेरितों 15)।

(8) आरम्भिक कलीसिया के अन्य अगुवे: अपने कई पत्रों के अन्त में पौलुस की टिप्पणियां यह संकेत देती हैं कि सीलास, तीमुथियुस और अन्य भी पौलुस के साथ थे जब लूका वहां उपस्थित था। इन आरम्भिक अगुओं से, लूका को काफ़ी जानकारी मिली होगी।

(9) यरूशलेम की तरह स्थानीय मण्डलियों के लिखित अथवा अलिखित इतिहास: एक मण्डली के साथ होने वाली बात दूसरी मण्डलियों की दिलचस्पी और चिन्ता का विषय थी। (मण्डलियों के नाम का पौलुस ने अपनी पत्रियों में, कई बार उल्लेख किया है कि जिन मण्डलियों को वह लिख रहा है उनके बारे में दूसरी मण्डलियां भी जानती हैं।) सम्भावना है कि महत्वपूर्ण होने के कारण इन घटनाओं को दर्ज किया गया होगा।

इस सूची से लूका द्वारा प्रयुक्त कुछ सम्भावित स्रोतों का पता चलता है। परन्तु, अति महत्वपूर्ण (और अत्यावश्यक) स्रोत *पवित्र आत्मा* था।

पादटिप्पणियां

[1]एक प्रारम्भिक परम्परा के अनुसार यूहन्ना मरियम को अपने साथ इफिसुस में ले गया और वहां उसकी मृत्यु हो गई। तथापि, सत्य भी हो, यह लूका के यरूशलेम आने के बाद की बात होगी।